

११६ न्यासिद्धि पूजा मोदनी पूजा

ASHA ARCHIVES

3561

ॐ ३॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ अजुद्यामथुराया कारिकात्रीः ईनतीकाः
रावतिश्चैव स प्रेते मोक्षदायका ॥१॥

याग ॥ ॥ दिगं स्वानका काम
स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमः श्री

कावलीपात्रम् ३

वेनाग्य
हाकि
सहिना
यः ३

कूं ३ कूं २ ॐ ३ ॥ हनो धमनु पदपाडा कनूपागुयाकगुंजलि ॥ कनूपा
 गुन धममनुनगुंजलि ॥ गयक दवस्क ॥ ॐ यमायदधुहस्ताय सर्वसमाय
 कूं ३ ये ३ नमः ॥ ३ ॥ हनो कनूपागुन गुंजलियाचक ॥ नैजो धी कुं हनो
 ह २ कनूपागुन नृपस्थनाय ॥ स २ कनूपागुन कि स हिगाय अवन २ न २
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ कूं कनूपागुन महा ह न वाय वेना ग २ कि स हिगाय अवन २
 स्वाहा ३ ॥ धमनु दवाहलस्वान १०२ अरुगजपलप १०२ रुतसायातकि
 सलिलसगयाडा कापगन पादविम्यं कनूपागु आययकाडा दवया
 कुवनग ॥ ॥ गृहदगडागयाथध्वंशना ॥ ॥ अथ कनूपागुयाकागवान
 याधुलादिहकविमिडा यिक्कया १६ धनयाय लंखमगुलथलं धागासन
 याय अरुगग २ थस्वन अर्घपागुयालंखनहाय ॥ ॥ ॐ कूं अस्त्रा

यरुट् ॥ कूषानथिय ॥ ॐ कूं हदयादिन उयाकन्यासमायक ॥ गगाध्वनद
 वस्कग ॥ पंवाहादद प्रएवागिजं २ः ६० जन्वयाहीषधनूपधनी ॥ कलाधिदेवः
 कथितः कवीन्द्र एयानका १ सो एयलवज्जमा ॥ गगाध्वनमाय कनूपागु
 याकग ॥ ॥ गुंजलिगदवस्क ॥ नैजो धी ॥ ॥ एयानकनूपनृपस्थनाय ॐ ३
 एयानककि स हिगाय अवन २ ३ ३ स्वाहा ॥ ३ ॥ हनो पागुयाकग ॥
 दवस्कग ॥ ॐ नभा १ गयगयप्रतप विवगायरुगहदयायसकल
 नृपि १ स्वाहा ॥ पागुयाकग दवस्कग ॥ ॐ नभा नृडाय एगवाका १ ध १
 नायनभा आगिपगं गयसिद्धि नृडाकायगिसिद्धि दहिस्वाहा ॥ ॥ मूल
 ॐ कूं काधनूपनृपस्थनाय कूं ॐ ॥ धनपूष्याकतजपलप ॥ १०२ ॥ धस्वान
 सलिलसगयाडा कापगन पालविम्यं पागुआयकाडा दवस्कग धागधन

काठाभाषयूजा ॥ पठुगर्ग्यद्याय मधुलदयकं स्नानं महामायां प०
 ॥ क्रमाश्रुति अगगन्धदि ॥ ॥ धनलितालधनादियात अश्विकच
 न्देनादि आशीर्वाद समयविय तालधनादियात नयमतव पालवि
 स्यंग ॥ ॥ न्यासाश्रुति विलिखिसर्जनं सूर्यमादिथाम ॥ धनलिकनृपा
 गयाऊपलय ॥ नृपस्वनभागक २ कूं अं स ह स्वाहा ३ ॥ आगच्छ ऊर्गता
 ध कनृधमूर्तिदीकन ॥ त्वन्यमादनसकलं माहयत्यनमस्वन ॥ धनय
 दपाठा कनृधपागुविय थडा २ स ॥ कनृधपागुयाविय ॥ ॥ कनृधपा
 गुव कानधपागुथिथि मथियकं नानमडाचकं भवथियमतडा नान
 डायमतडा ॥ धूपकं थस्य पाग्यादुडा २ गुनृधकनृधमन्त्रानधयास्य
 मालिनीपदपंठानं अनुरोधमवलान दुध्मचकं डान नंगसात्रास ॥

नंगसात्रास दुडानं नं सासखीन वंरथचकं कनृधपागुदक सं कान
 धपागुयातं ॥ ॥ धनदवयूजायाम सनाय धूप दीपजाय स्नाय ॥ प
 ठुगर्ग्यद्याय महामायां प० ॥ अगगन्धदि ॥ धनक ॥ धनजानकं रुया
 स्नानकायाडा दवया अग्रसर्गे ॥ ॥ धनलि सासखीन वंरथलाथसं
 लंखमधुलदयकं ॥ गलमदग उलीरु कानधयातं ॥ धर्षागासन
 मधुलदयकं गायनहालं पृथ्याकतग रथकनृधपागुस्वन दवसम
 खन कानधपागु उरुनमीचकं ॥ नवन १ पृष्ठिधन कनृधपागुया
 रुवनं ॥ अथकनृधपागु रंभधन नासिय प्राणायाम ॥ ॥ अं कः कः अ
 म्नायरुट् ॥ अर्धपागुयालंखनहाय ॥ अं कः कः अम्नायरुट् ॥ कृष्णनगा
 उनी ॥ ३ ॥ अं कौ कौ नगुयायवोमट् ॥ नीनीकृष्ण ॥ ॥ कनृधमन्त्रदीकृष्ण

नदहाधजपन ॥ धनमूडाकन ॥ ॐ कौं कौं रुदयादि षडंगन पूजा ॥ ८ ॥
 कनूला मूलमकुंदा - दहाधगिन सिधुपयन - तथेव रुदिधुपयन ॥ मूल
 नजलाकगन दहाधगाउन ॥ तथेव दहाधगिन सि - कनूला नगाउन - तथेव रु
 दि - धन ॥ १६ ॥ धन ॥ पुष्पाकगजाकाउ - कनूला मूलमकुंदा पुप १०८ ॥ धन
 नजाक रुयास्वानेठाना पच्छासंग - कति २३२ ॥ कानन पागयां ३२ ॥
 पुपाउ - नापच्छासंग - अंगरुधनममाल - कनिधया - धनलि - प्याख
 नरुयकमालसा - दवकाकाउा रुयक - कानन गलकाउा - रुकवियक ॥
 नागकायक - स्नानन रुयक ॥ विद्यायथय ॥ प्याखन रुयममालसा -
 रुक रुक विय - स्वास्यील - दिगकमगाउा - गनमगाउा - रुवकीगया
 स्नान रुकायमगाउा - धनलिवाकनकाय - दवक - सगुलकाय - तथे

हा - धनलि - गालधनादि प्याखन रुयनिरु - अरिषक - चन्दनादि - सगुल
 हीर्वाद विय ॥ वाकन विय - गुनसंगतय्येलायाय - समयविपनथिय - न्या
 साभुल - वलिविसर्जन - सूर्यसाकिथय - लाञ्छयाय ॥ ॥ इति कनूलाया
 एरुधनविधिसमाप्तम् ॥ ॥ अथ प्याखन लिगय विधान ॥ नकस - ना
 टुधन आनमू पूजायाये ॥ यजमानमन - पुष्पाकाउनयावक ॥ ॥ अख
 मगुलाकापला - गुननमस्कान ॥ न्यास - ॐ कौं कौं रुदयादि न्यास ॥ रुलयाय
 पूजा - रुकानकूटन - षडरुन - समूय - आवाक - धनमूडा ॥ ॥ गभय
 ॥ ॐ कौं नमः सत्सुबाहव विष्णुह - गाधुवायधीमहि - तन्नातृभ्यः प्रणम्य
 ॥ ॥ नृपादि सर्वशोक ॥ ॥ इति रुलपागपूजा ॥ ॥ अर्घपागपूजा ॥ अधाना

सु-सकानकुटनसंयुक्तं नमः ॥ आवाययानिमडा ॥ ॥ रतगुडि ॥ ऊं
 आधन ॥ ऊं लिं ॥ ऊं ना ॥ ऊं ददि ॥ ऊं क ॥ ऊं लला ॥ ऊं
 लला ॥ ऊं क ॥ ऊं ददि ॥ ऊं ना ॥ ऊं लिं ॥ ऊं आधन ॥ रति
 रतगुडिः ॥ ॐ हं हं महानृत्यधनमहादेवदायआत्मननमः ॥ ॥
 वन्दनादिरुषधम् ॥ ॥ कमलुलस-सुसुसुसुसुसु ॥ हं कलवकस
 कलसंभाहनत्पादि ॥ आवायधनमडा ॥ भूयादिमासनकप्रत्पादि ॥ दवस
 नानेयावक ॥ ॐ कानवायवीजत्पादि ॥ पंचामृग-भलिस्तान-मूलमनुष-
 यन्दन-सिद्धन-दृष्टि-ऊजमका-कर्णपगाका-पंचपगाका-भूदुता-
 स्तानकय-वगामधिकाय-धलिपाग-न-रुलकवावाहन-दवस्कय
 लं-नाटधनस्क-लंगरमाल-पूजाधाय-वलीस-पपागन-दादनकका

यक ॥ ॥ गतः पूजनं ॥ सूर्यार्घ-गुननमस्कान ॥ न्यासादि आत्मपूजानं सर्व
 पूर्ववत् ॥ श्रीसम्बकासुपेक्ष-प्रिदव ३ थागिनी-संपूष-स्वस्वमनुषवलि-
 आवाय-ददुगर्जनी-गऊ-यानिमडा-दर्शयत ॥ ॥ ॐ हं नदिननमः ॥
 दक ॥ ॐ हं महाकालाय २ ॥ वाम ॥ ॐ हं गद्यपगय २ ॥ दद ॥ ॐ हं वटका
 य २ ॥ वाम ॥ ॥ ॐ हं आधनगकाय २ ॥ ॐ हं अनकाय २ ॥ ॐ हं स्कन्दाय २ ॥
 ॐ हं नात्ताय २ ॥ ॐ हं पयाय २ ॥ ॐ हं कलनाय २ ॥ ॐ हं कर्णिकाय २ ॥ ॐ हं पद्मा
 सनाय २ ॥ ॐ हं प्रतासनाय २ ॥ ॐ हं दृषासनाय २ ॥ ॐ हं नृत्यधनाय २ ॥ आत्मनय ॥
 ॐ हं धर्माय २ ॥ नैर्जीत्य ॥ ॐ हं हानाय २ ॥ वायव्य ॥ ॐ हं वेनाग्याय २ ॥ द्वाधन ॥ ॐ
 नृत्यधनाय २ ॥ अग्नि ॥ ॐ हं भूधर्माय २ ॥ पूर्व ॥ ॐ हं अहानाय २ ॥ दक्षिण ॥ ॐ हं
 अवेनाग्याय २ ॥ पश्चिम ॥ ॐ हं अनेधर्माय २ ॥ उत्तर ॥ ॥ धागभूदृष्टिगपूजा ॥ ॥

कालं च वामकं गन्धर्वैः किन्नरगणैः र्यवास्तुत्रमभानमैः । अभयमानं मुदायुक्तं वायु
मानं लयांगकं । आनन्दहाकि संयुक्तं मय्यभोगसवितां । हेनवं नृत्पनृपयुक्तं सर्वा
लंकान् । हारिणं । नृत्पमानं महादवं सर्वदेवगणैर्हृतम् ॥ एवं ध्यात्वा महादवं ना
टकार्यसूत्रिद्वय । मानवानां हितार्थं यः सर्वद्विगताहो न । ध्यानयुक्तं २ ॥ ॥ पूज
नं ॥ ॐ कूं लं स्याज्जाताय २ ॥ ॐ कूं वं वामदेवाय २ ॥ ॐ कूं नं अधोनाय २ ॥ ॐ कूं येन
त्युनवाय २ ॥ ॐ कूं कूं ॥ श्रीभूतनाय नमः ॥ मध्य ॥ ॥ ॐ कूं जं ग किनीयागिनीरुगु
कलेनवाय २ ॥ ॐ कूं नं नाकिनीयागिनीगिष्यान्ककलेनवाय २ ॥ ॐ कूं लं लाकिनीया
गिनीभ्रग्विवासासलेनवाय २ ॥ ॐ कूं कूं काकिनीयागिनीभ्रग्विजिह्वालेनवाय २ ॥
ॐ कूं मां साकिनीयागिनीकालाकलेनवाय २ ॥ ॐ कूं हां हाकिनीयागिनीकपाललेनवा
य २ ॥ ॐ कूं मां याकिनीयागिनीत्रकपादलेनवाय २ ॥ ॐ कूं कूं हीयणीयागिनीलीम
नृपलेनवाय २ ॥ ॥ गिष्यादिः श्रीभूतनाकं ॥ ॥ पूजनं ॥ ॐ कूं वन्द्यमगुलाय २ ॥ ॐ कूं

सूर्यमण्डलाय ॥ ॐ हूं अग्निमण्डलाय ॥ म० ॥ ॥ गंगाधरपूजा ॥ ॐ हूं सृष्ट्या
यं ॥ ॐ हूं यज्ञवेदाय ॥ ॐ हूं सामवेदाय ॥ ॐ हूं जथर्ववेदाय ॥ पूर्वादिउल
नादि ॥ ॥ ॐ हूं कृतयुगाय ॥ ॐ हूं द्वापयुगाय ॥ ॐ हूं कलियुगाय ॥ आर्य
यादिः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ हूं अंबुकाय ॥ ॐ हूं कोऽसितांगाय नवाय ॥ ॐ हूं
कौमाहव्याय ॥ ॐ हूं कोऽनूले नवाय ॥ ॐ हूं चंकोमाय ॥ ॐ हूं कोऽवतुले न
वाय ॥ ॐ हूं दंवेष्टाय ॥ ॐ हूं कोऽकाधाय नवाय ॥ ॐ हूं तंजवावाय ॥ ॐ हूं को
उमल्ले नवाय ॥ ॐ हूं पंजराय ॥ ॐ हूं कोऽकपालाय नवाय ॥ ॐ हूं यंजवा
मण्डाय ॥ ॐ हूं कोऽलीयवाय नवाय ॥ ॐ हूं हांजमहालक्ष्म्याय ॥ ॐ हूं कोऽसंज्ञान
ले नवाय ॥ पूर्वादिः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ तंजहमहानृपस्य नवाय सप्तनृप
लक्ष्मीयैः सहिताय ॥ म० ॥ ॥ वायुलाकपालपूजा ॥ ॐ हूं लंकाय ॥

ॐ हूं नृअय ॥ ॐ हूं मयमाय ॥ ॐ हूं नृनेर्मत्याय ॥ ॐ हूं वृव नृक्षमाय ॥ ॐ हूं
युवाय वं ॥ ॐ हूं मृकवाय ॥ ॐ हूं हूं श्रीगणेशाय ॥ ॐ हूं अंभुधम ॥ ॐ हूं
वृउर्याय ॥ पूर्वादिः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ हूं अठिनादिनकृत्त्याय ॥ ॐ हूं वि
स्कीरिदियालाय ॥ ॐ हूं अमादिद्यादनाहालाय ॥ ॐ हूं ववादि कनरालाय ॥
ॐ हूं मासालाय ॥ ॐ हूं पकालाय ॥ ॐ हूं वर्याय ॥ ॐ हूं कल्याय ॥ ॥ नवनम
जा ॥ ॐ हूं हूं नृपमहाले नवाय आधनगकि सहिताय अवतन २ स्वाहा ॥
ॐ हूं वृं श्रीवीननृपम० धर्मगकि स० अ० स्वाहा ॥ ॥ ॐ हूं हूं कनरनृपम०
ज्ञान ॥ ॐ हूं हूं सहिताय ० अ० स्वाहा ॥ ॥ ॐ हूं हूं काधनृप ॥ म० वेनाग्वल०
अ० स्वाहा ॥ ॥ ॐ हूं हूं ह्याननृपम० नृव्यय ॥ ॐ हूं हूं ह्यानगकि स० अ० स्वाहा ॥
ॐ हूं हूं ह्याननृपम० ॥ ॐ हूं हूं ह्यानगकि स० अ० स्वाहा ॥ ॥ ॐ हूं हूं वीरनृप

म० अववागध० अवग० स्वाहा ॥ ॐ हूं मां भो दुःखम० भूने धर्यस० भू
वग० स्वाहा ॥ ॐ हूं मां भो मय नृपम० अध्व० मृगकिं स० अवगन० स्वाहा ॥
धमकुनवलि ॥ ॐ हूं ह॥ महानृपध्वनरेनवायस॥ नृपलक्ष्मि सदि
तायमाय ॥ अंजलि ३ ॥ ॐ हूं हृदयादिषु उंगनसंपूज्य ॥ धमकुनवलि
॥ आवाअ उर्ध्वाङ्ग नृपमृदां दर्शयत ॥ मूलनवलि ॥ ॐ हूं हं हृदयपाला
यवलिङ्गुक्त० स्वाहा ॥ ॐ हूं वां वद कनो धयव० ॥ ॐ हूं गंगधपगयव० ॥ ॐ
हूं सोम सर्वभागिनी र्णाव० ॥ वलिकुडा धपागस० अशुस० वलिविय ॥ ॥ मध
सवलिवियमनु ॥ ॐ हूं सर्वविघ्नक ह्यः सर्वतन्त्रावलिङ्गुक्त० स्वाहा ॥ ॐ
हूं नृपध्वनमहाहरेनवायसर्वविघ्नहनाय नृपसर्वसिद्धिकान्ताय हूं वलि
गुक्त० स्व० स्वाहा ॥ स्वाकमहावलिनधूनक ॥ आवाअ मृदा

पूर्ववत् ॥ धूप दीप ज्ञाप ॥ ह॥ नृपध्वनमहाहरेनवायस्वाहा ॥ पठ ॥ स्नाय ॥ वृ
षिपूजा ॥ पशुपूजा ॥ पशुगर्धन ॥ तर्पणाय ॥ समय दक्षिण ॥ अग० सिन्धु ॥ उ
कान्तक ॥ अश्वपूर्व ॥ स्नानविय ॥ वलि विसर्जनं ॥ साक्षिधाय ॥ नाटध्वनस० स्नान
यदागप्रावनस्यनधायस० आदस० अग० सिन्धु ॥ ज्ञाप स्नान अग० सिन्धु ॥ साक्षात्
दयक ॥ नाटध्वनस० रुया आगणस्नान ॥ नाटध्वनसानाधायस० स्नानसाहितं क
म० वलियाग १ ॥ नाटध्वनमूलन पूजनयाय ॥ ॥ सनायं क्रिथक० स्नानकन
न० आगणजा ॥ मगविय प्पाखनसन्त० हृगमाचिन ॥ लाश्रयाय धतलित
विधान ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ गताद्याचलसिद्धिकायविधान ॥ ॥
नकसनाटध्वनपूजनं ॥ प्पाखनलितया हृथं सकगानपूजनयायमाल
मनु ॥ नाटध्वनसमूलमनु ॥ संप्रदाय समस्त धवरमनुन पूजनयाय मा

ल- वाक्- घघनावन्धनपूजा ॥ ॥ ॐ अं कूं हूं श्रीघघनायपवयिरुह
 लयनमः ॥ ३ ॥ अङ्गेनसम्पूज्य ॥ वलि ॥ ॥ भूय ॥ ॐ नित्यं नमामि
 नृपदि गण समस्त- नाद्यो घसिद्धिकलितानपि नृमानवीध्या- प्रथमसर्किय
 नक्षत्रं कजमकर्तृगत- सप्राप्यनधनलिमधुलना अलक्ष्मीः ॥ श्रीसम्बर्क ॥
 अखण्डमधुला ॥ शुद्धधर्मः ॥ पापारं- पशुनर्प्य- यजमानयालाहारीस-
 त्वलिकथाय- घाघनहूय- सृष्टादिनमालका ॥ संप्रदायसमर्कहूय ॥
 धनघघनसिद्धिविधान ॥ ॥ धनगानपतिकाययाविधान- रगलावनन- शु-
 जपगुप्तथाय- मिजनशनसा- नामधुधन- मनु ॥ ६६ कानकूटनमिहका ॥ न-
 करसिद्धिरुद्रनमः ॥ सहकानकूटनमिसाहका ॥ श्रीका- प्रिय- गाय-
 प्रका- शक- धननापक्या- गानपतिसुधन ॥ ॥ नाटधनमूलमनु-

पप्रनामसंयुक्त- शुजपगुप्तथाय- लागसाउकन- मलागसाहधकनथा-
 य- ॥ ॥ गगनाटधनपूजन- नृपधनदवावन- गुनस्मनसादि- आत्म-
 पूजा- कृथ- धनपूजायायमाल- आवाहनादिगिहूलपूजा- धूप- दीप- जा-
 प- भूय ॥ ॥ गगः तालपतिपूजन ॥ नाटधनसमूलमनु- गणयजलि ॥
 अङ्गेनसंपूज्य- वलि- गगः खदियाहापूजन- मनु- नाटधनमूलमनु-
 गणयजलि ॥ अङ्गेनसंपूज्य- वलि- धनं लि- ताल- रिव- मूर्ज- वदुनि- पा-
 ग- ग- वारुन- पूजायाय- अत- सिधु- दष्टि- जजमका- स्वान- ॥ नृप-
 धनमूलमनु- न्यासादि- आत्मपूजार्ककानयग ॥ पूजन ॥ ॐ कूं वं वगी-
 समूर्कयगालायनमः ॥ ताल ॥ ॐ कूं नदिमधुलाये ॥ ॐ कूं नमहाकालम-
 धुलाये ॥ खवखि ॥ ॐ कूं नदिमधुलायनमः ॥ मूर्ज ॥ ॐ कूं कोटीलयाय ॥

ASHA ARCHIVES

3561

वक्रनि ॥ ॐ कूं कूं कूं वि सिंह त्मने ॥ पा गम ॥ ॐ कूं कूं काल मूर्त्तय नि न ऊ न पदा
य ॥ गम ॥ ॥ ॐ कूं मं म हा का य काला द ना य ॥ वारु न ॥ ॥ ध्व गं यां ध व म नु
हा वलि ॥ नृ प ध्व न मूल म नु हा ॥ ष उं र ग न सं पू र्ण ॥ आ वा क्य मू डा ॥ मूल न वे लि
ध्व ग सं प्र दा य वी रु न पू जा वि धिः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
न म रू पृ थि वी मा ग ॥ र्य कू का न मृ गी रु ग ॥ न रा धि य आ ह्वा नं त ॥ न म दा धा न दी य त ॥ १
वा ह्या य या रू त्ता क थ ॥ ॥ ती ग य ॥ द व र्का य ॥ द द रा णि न ॥ आ ग पू जा ॥ क र
हा णि न ॥ खा क णि न ॥ ॥ ॥

[illegible]

लोमः ॥ नवकलांगदयादि ॥ ॥ जलपात्रपूजा ॥ यउरुनसंपूज्य ॥ आवाञ्जधन
 मूजा ॥ त्रैविष्णुनादवीविद्यारुसर्वभोगाल्पवनीधीमहितनः क्लिन्नः प्रयादया
 ॥ लखनराय ॥ भोगाल्पवनीतिआत्मविभक्ति ॥ ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ त्रैलोक्यैः अ
 र्घपात्रं पूजयामि ॥ त्रैलोक्यैः नूतनैः नूतनैः नमः ॥ आलाउत ॥ मूलवउं एनपूज
 नं ॥ आनिमूडा ॥ आत्मपूजा ॥ भारुनीरुयएउत कमान्नीपूजा ॥ ॥ कामभूना
 मिकायण अर्घपात्रादकनलिखद्विकार्षी ॥ कायासंग ॥ आरुः गाउच्चिय
 गुगुलि अगुलि कर्पूत कम्पूनी उकस्वान् शीका धूका अर्कइइडा अ
 कतगर्गयाद नककधर्मन यिताउठल ॥ यकनहामलन भारुनिरुय
 उइनदीयकपाग १० ॥ पूर्वदिः शीमनानं ॥ बलिपाग १ अग्रम ॥ गतः पूजनम
 त्रैलोक्यैः प्रयहिपनक्षमति लाकानूयहकानक ॥ अर्घवमधुलदवि सान्निध्यमे

पकल्ययत् ॥ आवाहनसूत्र ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ ग्लौ गद्यमयनमः ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ वां वदका
 य ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ कां कयपालाय ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ यां यागिनीया ॥ वलि आवाह
 नमडा ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ धर्माय ॥ ॐ ३ हूनाय ॥ वेनाय ॥ ॐ धर्माय ॥ अ
 माय ॥ अ हूनाय ॥ अ वेनाय ॥ अ न धर्माय ॥ ८ ॥ ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ अ
 न धीकय ॥ अ न काय ॥ क न्दाय ॥ ना लाय ॥ प न्दाय ॥ क न्दाय ॥ क न्दा
 काय ॥ प न्दाय ॥ ८ ॥ स सूर्यमण्डलाय ॥ स सूर्यमण्डलाय ॥ स वक्रिमण्डला
 य ॥ स सत्वाय ॥ न न कय ॥ न न मय ॥ ॐ वक्र प्रगासनाय ॥ क्लीं विष्णु
 प्रगासनाय ॥ सौः शिव प्रगासनाय ॥ ॐ श्री ध्वन प्रगासनाय ॥ क्लीं सदा शि
 व प्रगासनाय ॥ सौः पं वमरा प्रगासनाय ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ वालाक
 मण्डलागतां ॥ गिनया ॥ अ चतुर्भुजां ॥ पाठम कृणुधना वापं ॥ शिवागं सयगुं स

वस्तुमूत्रे ॥ २

वा ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ सर्वभोगलब्धे धर्म्ये ॥ न विजयाय ॥ लं अजिताय ॥ वं अपनाजि
 ताय ॥ ॐ क्लीं सौः ॥ सभाहिन्ये ॥ हं आकर्षये ॥ त्रिकार्षी पूजा ॥ ॐ हू
 न धीकय ॥ क्लीं क्रियाधीकय ॥ सौः ॥ कृणुधना वापं ॥ वलि ॥ मरुध ॥ अंजलि ३
 ॐ क्लीं सौः ॥ सर्वभोगलब्धे धर्म्ये विधीमायु ॥ प्रिध ॥ मूलकं उं रगनयुजा ॥ आवा
 क क्लीं सर्वकिर्षणी मूडां दर्शयन् ॥ वलि ॥ मूलनं कृडां गदुस वलिविय ॥ अ
 ओं अमिर्गा गले नवाय वलिंगुद्र ॥ स्वाहा नृन् वलु क्रोध उत्तरु कपाली
 शीषण संहान ॥ ८ ॥ ह गुरुकले नवाय वलिंगुद्र ॥ स्वाहा प्रियुनाकक अग्नि
 वनाल अग्नि जिह्वा कालाक कनाली चकपाद लीमनूप हाटक अचल
 १० ॥ अं वक्रार्षी वलिंगुद्र ॥ स्वाहा माह ध्वनी कोमानी टं वेषूवी गंवानी
 ही ॥ ८ ॥ वामधु महालक्ष्मी ॥ ८ ॥ ॥ क्लीं चतुर्भुजागिमे वलि ॥ घट्टयागि

ये ॥ महानाथः, इमं रवी, सुमं रवी, नवनी, घाना, सोम्या, हीमा, महावला, ऊया, विज
या, अजिता, अमनाजिता, महाकटा, विनूपा, की, गुक्ता, भाका, अमाणा, जागहा
नी, संहानी, दंष्ट्रानी, गुक्ता नवनी, पिप्पली, मूषाहानी, अहानी, अहमहानिणी, ए
काली, सुरडा, रडा, हीमा, सुरदिका, ३२ ॥ ॥ धनभाहनीस, मालका नृपद्व
नयूजा ॥ वलि विषदगुलिवलिस ॥ नुं मातृ वंश उमादवी, भिगु वंशः सदा शिवः ॥
रूप्यकुसुममहमन, मूषा कत सुवानिध ॥ रूप्यकुले नवा दवा, सर्वममसुनाधि
पाः ॥ यागिन्यः कयपालाद्यु, श्रीवक्रय अवस्थिताः ॥ अग्रगन्धादि, यजमान
स्य अमकस्य नृपसिद्धि सकला कसंभाहनाथं भाहनीसाधनप्रियूनसुन्दरी दया
वर्नविश्वे तत्सर्व विधिप निपूर्वमम् ॥ कतन ॥ इति भाहनीसाधनप्रियूनसुन्दरी
पूजाविधिः ॥ ॥ ॥ धनकृष्णपूजा ॥ वीरदयादिन्यास ॥ आसन ॥ आधनादि ॥

वृं कानासनाये ॥ ध्यान ॥ अंजलि ॥ वंश सह कलक मूषे पायू ॥ वलि, अघानवज
वतीणी, वलि, वीरदयादि, नूयवभुदि, वृक्षाध्यादि, वलि, नाट्यधन, यानिमृडा,
वृं ॥ मालक इस्वापिरवापूजा ॥ वलिमूल ॥ वतुः वलिध्यागिनिवलि, महावलि ॥ ॥
मधुलदयक ॥ स्नाय ॥ अखलुमधुला ॥ गिदवया ॥ अमकयन्रया ॥ ॥ अंनमः
मनदवगाये सदवीरासुसभाजाद ननिरवयूषीमारुयं म्दी गिलाकां किं श्रीमश्री
नहाना ऊदमूकटलसत्त्वर्षु मागिधनलैः ॥ एतन्मिन्द्रवकुं सुने एव नमिगा
कीलमध्यामिभगां, वृक्षाध्यायैः सुनन्दः सुनगलसहितैः संसुगालानमा मि
॥ विकाभाचयसंपदं विगनमम् ॥ यग्रथोगान्वितां, दानिद्रांदलयाधुनम्वकविगा
मूर्त्तिके नृधाम्बिक ॥ क्लान्तहिनिपूजहि कयमिरुध्वानं विरधमार्ह्या ॥ ॥
कनाधायवालगीत किनरक्षरुमपिधपाहिमां ॥ अतृग्रहाय एकानां, गृहीतदि

अविग्रह ॥ एकस्य रावयूजायाः सिद्धिं दहिमहठवनि ॥ कृष्ण्या ॥ मालकमुनि
 महामाया ॥ अगगन्धदि नमस्कान् ध्वनमहनीसाधनं ॥ ॥ अथनसंवात् नाटध्व
 किं पठुवलिविय वाथयूजा पठुयूजा पठुगर्पण पठुमृगुसमतविय वा
 कनकाय ॥ ॥ नाटध्वनस्क मलुल स्तुत ॥ महामाया कमाकुनि ॥ अगगन्धदि
 सकलसंदवजापयक ॥ ॥ यन्त्रया माहनीया मुतिरुष् १ यात्वं समय वृकन
 काय दवतर्पण सुगुणदिक्काय आत्मादीर्वादि त्यासाभ्रण ग्रियनसुन्दरीसा
 त्मनिलीनं भाहनीविसर्जन रथदगुलिवलि रथय रथिलयागुलियागुलिमग
 वनि लि रथय ॥ ॥ गुनपूजा दकिष्ण ॥ ॥ धनप्याखनभा सुयप्रतीन लया
 अन्नकमल स्वस्ति कथायाता सुयप्रती लखभलधसं लासालाता स्वस्ति
 कसस्वन निर्मकन अर्घवाग्रयालखनहाय ॥ ॐ कूं कूं अम्माययुट् ॥ ॥ ताव
 नं ॥ ॐ कूं कूं कववायकूं ॥ ॥ अवगुणनं ॥ ॐ कूं कूं भगवयायवोषट् ॥ निनीकणी

त्वन्मूला शिनसिगमययाऊयत् ॥ ॐ हूं सरुमवाहवविभरुताद्युवायधीमहि
 तन्नामृत्यः प्रसादयात् ॥ २ ॥ पूजा ॥ ॐ हूं रुहमहानृत्यध्वनरु नवाय अंकनाट
 कदवदलयापेनाहीये २ हूं रुट् ॥ ३ ॥ कों हृदयादिषउरु नमूजा ॥ ॥ गिसूय
 पायपूजनं ॥ ॥ सर्वथां अर्धादिकनहाय ॥ चन्दनादिसगुणदवस्कृष्टाय ताल
 धवादिगमयन-पनिस्क-चन्दनादिसगुणविय-धनंति-सूयआदि-प्रायतभा-
 पनिगवक-धनयतकेन-पूजायाकोठो-दक्षिणसरु-नदमलाहाय-स्वति
 यतनगवक ॥ ॥ तालधनादियातं-गमयनयातं-पाययालंखनहाय-गमयनया
 लाहातं-स्तलिकथाय-नृत्यध्वनमूल-षउंगनपूजा ॥ आवाय-चन्दनाद
 तपूष्य २ ॥ ॥ गमयम-आदिनसमस्त-संप्रदायमनुनपूजा ॥ ॐ हूं वं विष्णु
 वतालधनासमूर्त्य २ ॥ तालधने ॥ ॥ ॐ हूं नन्दिकध्वनायमहातेनवमूर्त्य

जव

नमः॥ खिं ॥ ॥ॐ कूं मं महाकालाय ॥ खं व खिं ॥ ॥ॐ कूं या अधनात्ममूर्त्यै ॥
 खिं उमा ॥ ॥ॐ कूं कं को ऽस्याधनात्ममूर्त्यै ॥ वं तुलिका न ॥ ॥ॐ कूं गं ग
 ध्वं वायसिंहात्मन कहलिकाय ॥ सग प्रव ॥ ॥ॐ कूं कं कालात्मन निन कुन
 पटधनात्ममूर्त्यै ॥ ग व ग क कान ॥ ॥ॐ कूं हं मृगं जन पटधनात्ममूर्त्यै ॥ ख
 व ग क कान ॥ ॥ॐ कूं धूं न दा उ गाल आदिन वाजन ह्नाय श्वा ॥ ग क ग पं व
 क म धि सहित न दय कं ॥ प्या ख न भा द को गाल पतिं हूं व आदिन सम सं ह्नाय ॥
 गगः पशु न रु म्याल मूर्जनं ॥ॐ कूं दु र्भ व कु नृ प ध्व नाय स्व ग नं ग म य ॥ॐ कूं त
 सूर व व कु नृ प ध्व नाय पी ग नं ग म य ॥ॐ कूं भू धा न व कु नृ प ध्व नाय क पू न
 ग म य ॥ॐ कूं वा म द व व कु नृ प ध्व नाय न क नं ग म य ॥ॐ कूं स आ जा त नृ प
 ध्व नाय स्या म नं ग म य ॥ॐ ति न रु पू जा ॥ ॥ दक्षि ण काय गाल पति न च व क

ध्व २ न
 प ध्व न म
 न म नु न म

या घ न न क्ता च का व ग ॥ सखा न ति प्र ति छा ता य हा ल ॥ ॥ क क वि स र्जन मह
 नी वि स र्जन या दा उ आ वा र्ग्य स्यं उ मा गा ह्नाय उ मा स्यं द व ग व का उ प्या ख
 न भा मृ ग आदिन संप्र दाय वा जन सम सं भा ह नी न ग व क म नु ॥ तूं कूं सोः
 मा हि नी ति कु ग ल्य भा ह न क नी वा हं महा सि धि दा पा या या द वि गो च ना हा न क
 नी सं सा न सं सा वि णी ॥ त स्याः स द नि ए भ व मृ द यं पू नं स द सा म्प्र तं द वी णी ति
 पू न ध्व नी वि क य त सं वा ज त भा ह नी ॥ क ति २ द क्षि ण काय ॥ ॥ ग क ध्व य क
 ध्व न दी प ड य प दि उ मा न गाल का य कं ग क हूं ल प्या ख न क य कं मृ ग आ
 दि न प्र व ण या ल कं ॥ व लि वि स र्जन य रु मा न ति र्म क ना दि क ल ग म लि थ क
 व न ना दि स गु ण आ णी र्वा द आ न ति को मा नी द र्ग न समय सूर्य सा कि
 य रु मा न स्य गाल प प्र व न्ध न पू जा सं पू र्ण थं कृ त क र्म णः सा दि णी ग्री सूर्या

[illegible]

इष्टं शुभं पश्य ॥ ३ ॥ ॥ बालं गन्दीवघृष्टं अलिमहत्त्वपन्नं वामहस्तकमलं
लं भागं यक्ष्मापवीतं अहिगणनं नदीनूधुमालास्थितं ॥ ४ ॥ अट्टकटं यक्ष्मा
लं विनसिद्धिं कलाव्याघ्रवर्मकटिस्थं स्थितोर्वाश्वाहनस्थं कटिकटि
लं ताताधुवमूगनाथम् ॥ ५ ॥ निर्विघ्नं नाटकार्यं नवनवलयगा सर्वसिद्धान्त
तत्त्वं भागं विरहवेकनोर्थं प्रियूतनियूरुनं नृपमानन्दलावम् ॥ सर्वभावं वधुभि
सगणपतिजनसर्वनृपतिलाकं जेताब्धिपगित्वं सज्जयविजयगानृपनाथं न
मस्तु ॥ ६ ॥ क्राधधुस्तमनाहुवान्धकनियूर्वामांगणिकिः प्रभुः शृष्टिपदकसं
हनज्जगदिगदयालावनिनिमित्तं ॥ ध्वनाहाकिनिमित्तलावनविरधोभागनि
तत्तिदा कालीः कलनायकाविजयगानृपस्वभावं नवः ॥ ७ ॥ वृक्षातालध
भाहनिधुमूनर्जवेभकनारानगी वंशशूरीहाहालास्तु प्रोत्तिष्ठसिंहस्यका

रुनां विवादजनसा थवतं जयशयीता रुनां लता प्रत पिभच दाकिनी स
 किनी धाकिनी वाक्ता थप निसनानं थियमरू रुनां संयामस हायुलयम
 माल रुनां श्रीनृत्यनारथधनभक्त सिद्धियन्त्रयायं किता ॥ गिरी सर्वसोता
 रग्धधनीस यन्त्ररूना ॥ ॥ ॥ ॥ सं २० अधिक आठिन ह १४ ना
 तस्मिन्दिन नाशो वक निम्न श्री सर्वरू ना जठपाध्याया इति खदि गिर हम् ॥ ॥

